बाजार के माँग के अनुरूप फसलों में फेरबदल कर सकते हैं।
यदि उपरोक्त मान्यताएँ लागू होती हैं तब बाजार केन्द्र के चारों ओर कृषि प्रारूप सकेन्द्रीय वलयों में विकसित हो जायेगा और 6 समकेन्द्रीय वलय विभिन्न कृषि प्रतिरूप के अनुरूप विकसित होंगे।

i- दुग्ध, सब्जी, फल पेटी
ii- ईंधन की लकड़ी की पेटी
iii- गहन कृषि पेटी
iv- फसल, चारा, परती पेटी
v- फसल, चारा, परती पेटी जहाँ फसल क्षेत्र कम
vi- पशुचारण पेटी

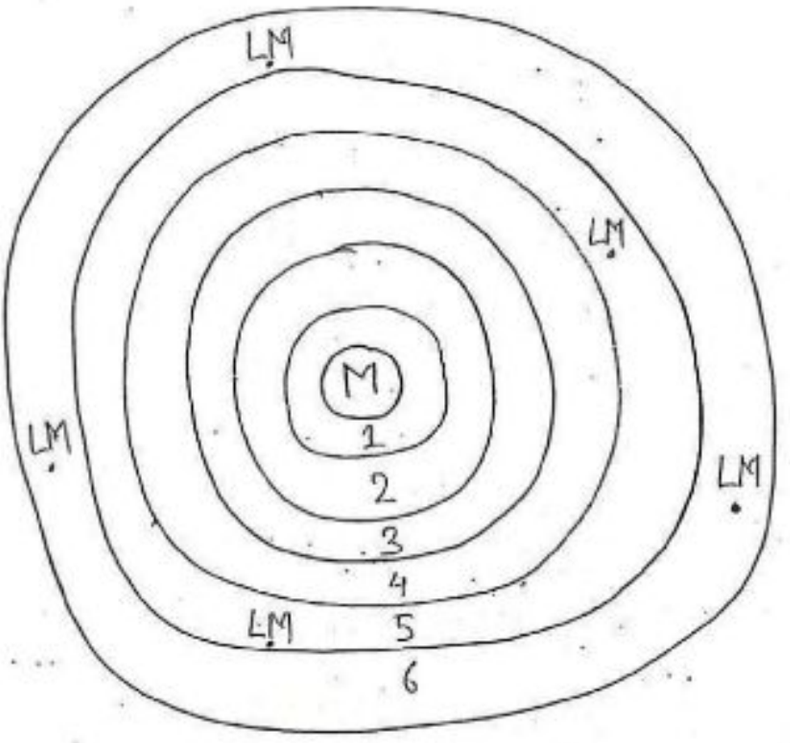

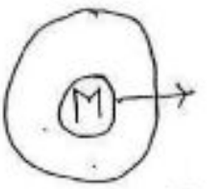

कृषि गहनता में कमी
आर्थिक लाभ में कमी

इन 6 कृषि पेटियों में फसल प्रतिरूप, कृषि गहनता तथा उत्पादित फसलों से होने वाले लाभ में भिन्नता पायी जाती है और बाजार से दूर जाते हुए कृषि गहनता एवं आर्थिक लाभ में क्रमशः कमी आती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

→ V.T. ने संकेन्द्रिय कृषि पेटियों के सीमांकन का कार्य किया और इसके लिए फसलों के तुलनात्मक लाभ को आधार बनाया। इन्होंने एक सूत्र का प्रयोग किया जो बाजार मूल्य, परिवहन लागत और उत्पादन लागत के अनुपात पर आधारित है।

लाभ = विक्रय मूल्य − (परिवहन लागत + उत्पादन लागत)

$$P = V - (T + E)$$

इस मॉडल के अनुसार किसी भी पेटी का निर्धारण करने के लिए 2 प्रमुख फसलों के लाभ का अध्ययन कर उस फसल को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए जिससे लाभ की प्राप्ती दूसरे फसल से अधिक हो लेकिन बाजार से दूरी बढ़ने के साथ जैसे ही पहली फसल से लाभ की तुलना में दूसरी फसल से लाभ में वृद्धि हो सके तब पहली फसल की कृषि बंद कर देनी चाहिए और दूसरे फसल की कृषि प्रारम्भ किया जाना चाहिए इसी क्रम में दूसरे फसल का तीसरे फसल की तुलना कर दूसरी पेटी का सीमांकन किया जाता है क्रमशः यह क्रम अपनाते हुए अन्य फसलों के लाभ का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्य कृषि पेटियाँ निर्धारित की जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

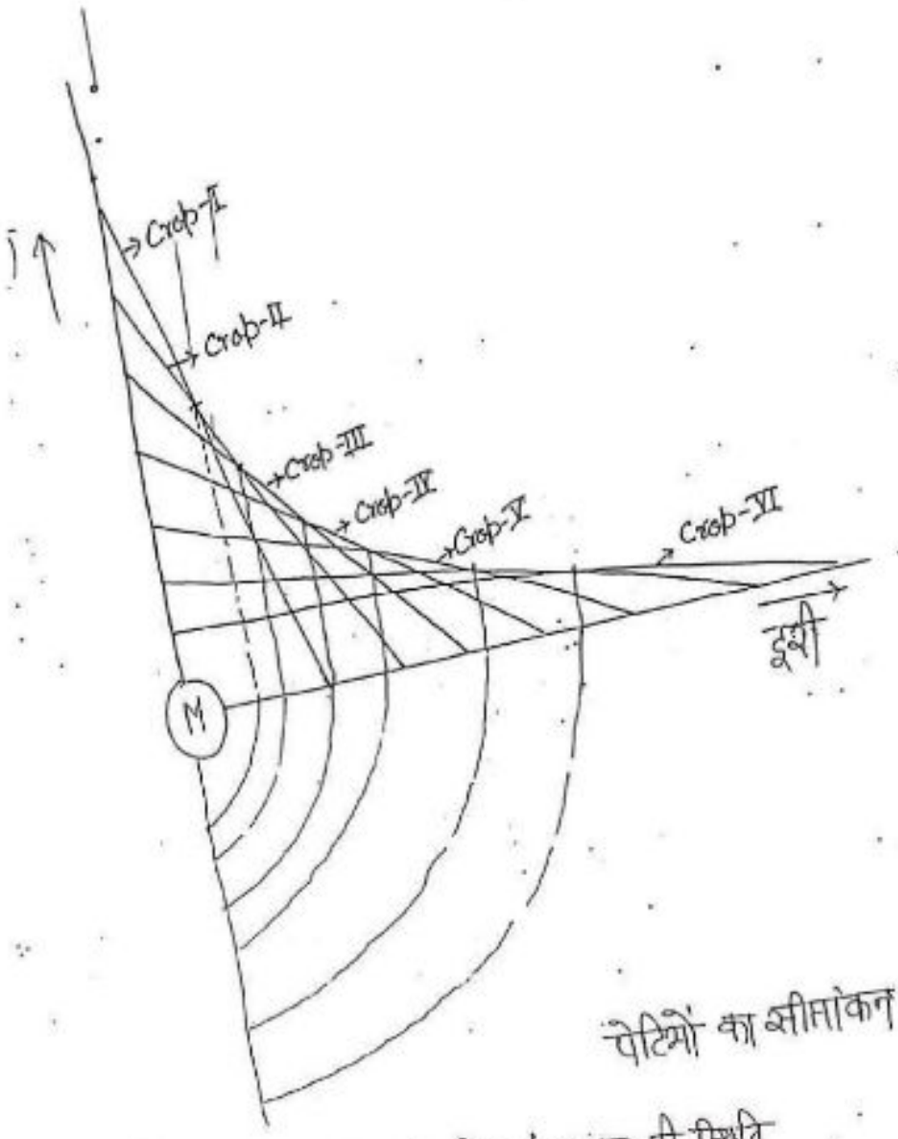

पेटियों का सीमांकन प्रक्रिया

लकड़ी की कृषि की दूरी एवं लाभ की स्थिति

इकाई दूरी	विक्रय मूल्य	उत्पादन लागत	परिवहन लागत	लाभ(P)=V-(C+T)
.5	200	140	10	50 (क्रमशः लाभ में कमी)
1.0	"	"	20	40
1.5	"	"	30	30
2.0	"	"	40	20
2.5	"	"	50	10
3.0	"	"	60	0 (लगान शून्य भूमि)
3.5	"	"	70	-10 (क्रमशः हानि में वृद्धि)
4.0	"	"	80	-20
4.5	"	"	90	-30
5.0	"	"	100	-40

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

VT ने पेटियों के सीमांकन की व्याख्या के
क्रम में लवाड़ी की कृषि का उदाहरण दिया। जिसे
उपरोक्त आरेख से समझा जा सकता है। आरेख
से स्पष्ट होता है कि दूरी बढ़ने के साथ परिवहनलागत
में वृद्धि के कारण लाभ में कमी आती है और उ
इकाई की दूरी पर लाभ शून्य हो जाता है ऐसी
दूरी व भूमि जहाँ कृषि उत्पादों से लाभ शून्य
हो जाए उसे लगान शून्य भूमि कहा। VT के
अनुसार किसी भी फसल की कृषि अधिकतम
शून्य लाभ तक किया जा सकता है इसके बाद
ऋणात्मक लाभ के कारण ~~व~~ इस फसल की कृषि
बंद कर दी जानी चाहिए।

हालांकि लगान शून्य भूमि के पूर्व भूमि
पर भी कृषि उस सीमा तक किया जाना चाहिए
जहाँ अन्य फसलों की तुलना में लाभ अधिक
प्राप्त हो।

इस तरह VT ने विक्रय मूल्य,
उत्पादन लागत, परिवहन लागत तथा कृषि उत्पादों
के स्वरस्वभाव एवं उपयोग के स्तर एवं
आवश्यकता के अनुरूप कृषि पेटियों के सीमांकन
का कार्य किया।

उपरोक्त आधारों पर ही VT ने बाजार
केन्द्र के चारों ओर 6 कृषि पेटियों की स्थिति का
निर्धारण किया और इसे वलयाकार स्वरूप में
स्वीकार किया इन पेटियों की विशेषताएं एवं फसल
प्रतिरूप की व्याख्या भी उपरोक्त आधारों पर
किया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कृषि पेटियों की विशेषताएं

प्रथम कृषि पेटी में दुग्ध कृषि, सब्जी एवं फल कृषि का निर्धारण किया चूंकि ये दैनिक प्रयोग के वस्तु है और ताजा उपयोग किया जाना चाहिए इस आधार पर बाजार के करीब पहली पेटी में इनकी कृषि की जाती है। इसके अतिरिक्त यदि अधिक दूरी पर इनकी कृषि की जाय तो खराब होने की संभावना रहेगी जिससे लाभ में कमी आ जायेगी।

दूसरी पेटी में ईंधन की लकड़ी की कृषि की जायेगी चूंकि यह भी दैनिक आवश्यकता की वस्तु है और अधिक भार के कारण अधिक दूरी में कृषि करने से परिवहन शुल्क में वृद्धि के कारण ईंधन की कीमत में अधिक वृद्धि हो जायेगी जो आर्थिक संकट उत्पन्न कर सकता है।

तीसरी पेटी में उपलब्ध भूमि की अधिकता और आवश्यकता के अनुरूप गहन कृषि की जायेगी चूंकि यहां जनसंख्या का दबाव अधिक होता है अतः अन्न अथवा खाद्यान्न फसल की कृषि की जायेगी हलांकि यह भी दैनिक आवश्यकता की वस्तु है लेकिन इसे अधिक दिनों तक संरक्षित, सुरक्षित रखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

चौथी पेटी में खाद्यान्न फसलों के अतिरिक्त व्यापारिक फसल की कृषि की जायेगी जबकि कुछ भूमि परती रह जायेगी। यहाँ जनसंख्या की तुलना में भूमि की उपलब्धता अधिक होती है अतः यहाँ विस्तृत कृषि की जायेगी। इसे खेत प्रणाली कहा।

चौथी पेटी के आगे कृषि भूमि में क्रमशः विस्तार होती जाती है जिससे कृषि प्रतिरूप में महत्वपूर्ण बदलाव होता है। पाँचवी पेटी में भी फसलों की कृषि की जाती है लेकिन चरागाह एवं परती भूमि में वृद्धि होती है इसके आगे छठी पेटी में चरागाह की उपलब्धता के कारण पशुचारण का कार्य होता है।

पाँचवी एवं छठी पेटी में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप छोटे बाजार केन्द्र भी विकसित हो जाते हैं। इस तरह विभिन्न पेटियों की कृषि गहनता एवं कृषि प्रतिरूप में पर्याप्त भिन्नता मिलती है। प्रथम एवं छठी पेटी दोनों में पशुपालन का कार्य होता है लेकिन प्रथम पेटी में यह व्यवसायिक स्तर पर बाजार आधारित डेयरी उद्योग के रूप में विकसित होते हैं जबकि छठी पेटी में इसका स्वरूप जीवन निर्वाह स्तर का होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner